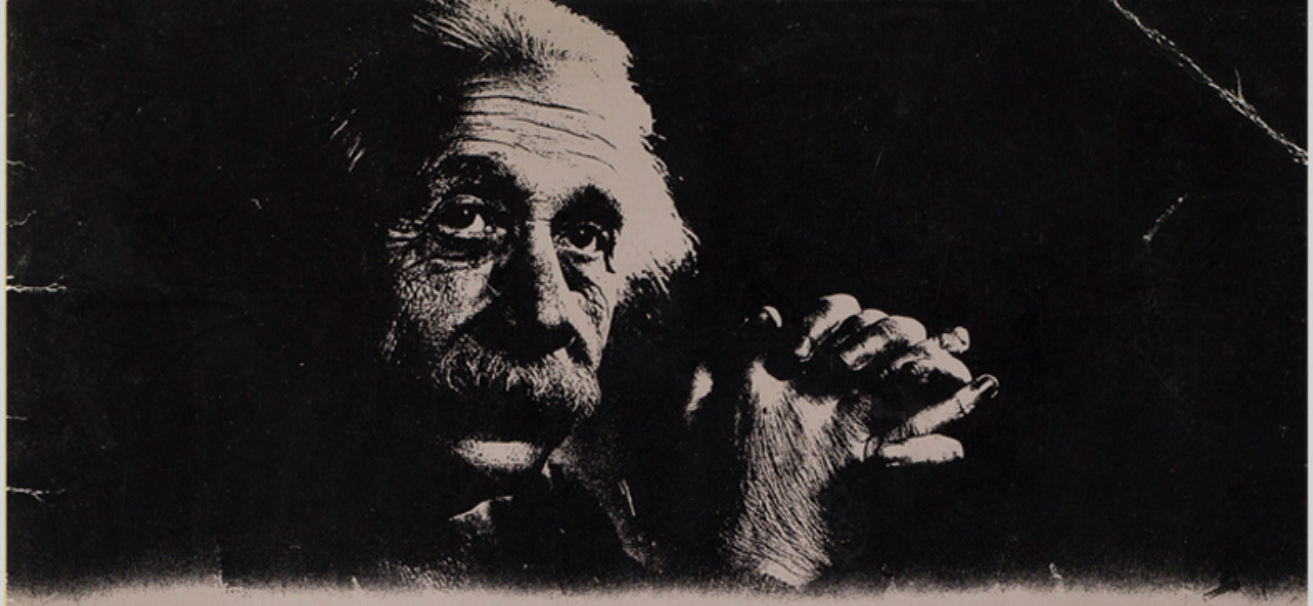

NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
REPERTORY COMPANY
PRESENTS

MOHAN MAHARISHI'S

Einstein

The story till 1905

Directed by
MOHAN MAHARISHI

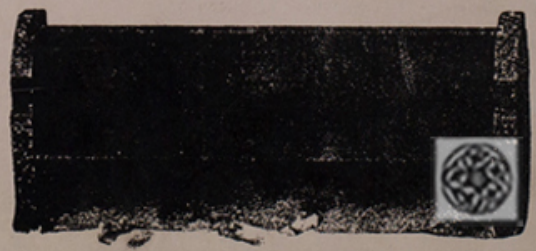

Costumes: DOLLY AHLUWALIA
Lighting: ASHOK BHAGAT
Music: ISTVAN JESENSKY
Choreography: SHARON LOWEN
Sets: MOHAN MAHARISHI

1994

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमण्डल

की प्रस्तुति

आइंस्टाईन

लेखन एवं निर्देशन

मोहन महर्षि

इस शताब्दी का आरम्भ विचारों की दिशा में मूलभूत परिवर्तन के लिए जाना जाता है, जहाँ तक अचेतन विश्व के विज्ञान का सवाल है आइंस्टाईन का योगदान इस परिवर्तन में असाधारण है। आज जो *उच्च भौतिकी* के नाम से जानी जाती है उसका प्रारम्भ कोपरनिकस, कैपलर एवं गैलीलियो ने किया और जो बाद में न्यूटन की भौतिकी द्वारा संश्लेषित हुई। न्यूटन के आगमन से विश्लेषित–गतिकी का एक महत्वपूर्ण चरण पूर्ण हुआ। इसमें यदि मैक्सवल के *विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र*, हर्ट्ज़ के प्रकाशकीय कार्य तथा वोल्ट्जमैन की *तापगतिकी* के दूसरे नियम की सांख्यिकीय व्याख्या को भी शामिल किया जाए तो *प्रतिष्ठित उच्च भौतिकी* की तस्वीर पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है।

इन सिद्धान्तों के मूल में जो तार्किक संरचना कार्य कर रही थी वह वस्तुगत एवं विषयगत यथार्थ के बीच स्पष्ट अन्तर दर्शाती है। बाह्यजगत् की घटनाएं तीक्ष्ण आकस्मिक विकास का अनुसरण करती है एवं जिस दिक् काल में ये घटनाएं घटित होती हैं वह निरपेक्ष होता है । अर्थात यदि दिये गये काल में किसी पदार्थ की अवस्था का *पूर्णज्ञान* प्राप्त हो जाए तो उसका आगामी विकास गणितीय निश्चितता के द्वारा सूचीबद्ध किया जा सकता है। आइंस्टाईन की महानता और साहस इसी तथ्य पर आधारित हैं कि उन्होंने पूर्व स्थापित एवं वंचित अत्यन्त सफल संरचना को आगे बढ़ाया। यद्यपि अपने सापेक्षता के दो सिद्धान्तों (विशेष तथा सामान्य) से उन्होंने हमारे दिक् और काल की धारणाओं को उस वक्त चौंकाने वाले अंदाज में परिवर्तित किया।

आज जबकि उनके भौतिकीय विचारों का योगदान सैकड़ों लोकप्रिय और वैज्ञानिक पुस्तकों एवं पत्रों में संग्रहित है साथ ही उनकी मुख्य धारणा विश्वभर के बाल-पाठ्यक्रम में पहले से ही सम्मिलित हो चुकी है, यह प्रश्न तार्किक है कि नाटक इसी विषय पर आखिर क्यों लिखा गया? यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि पदार्थ की स्वतःसंवृद्धि के बावजूद भी वैज्ञानिक समुदाय से बाहर बहुत संख्या में लोग आइंस्टाईन के योगदान से आज भी अनभिज्ञ हैं। यह किसी अकेले आदमी के लिए कठिन है कि वह मूलभूत सिद्धान्तों की विस्तार से व्याख्या कर सके और यह किसी के लिए भी कठिन होगा कि वह आइंस्टाईन के विचारों को यथार्थ के अपने ज्ञान को बदलने के लिए स्वीकार करे। मैं, व्यक्तिगत रूप से यह जानकर सचमुच बहुत आश्चर्यचकित हुआ कि आइंस्टाईन पर अब तक मात्र एक कनेडियन नाटक लिखा गया है जो वस्तुतः उनके जीवन की छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह है और सिर्फ़ उनके जीवन के करिश्मे को ही दर्शाता है। मैं जानता हूँ, कई तर्क इस अन्तराल की व्याख्या करने और इसे बचाने के लिए आगे आ सकते हैं लेकिन मुझे आश्वस्त नहीं कर सकते, क्योंकि इस और इसके समान दूसरी अनभिज्ञताओं के पीछे एक मज़बूत पक्षपात छिपा हुआ है।

दूसरे, यह मुझ जैसे वैज्ञानिक क्षेत्र से बाहरी आदमी के लिए एक परिश्रमी और साहसपूर्ण कार्य था। मैंने जीवन की इस अवस्था में व्यक्तिगत रूप से विषयवस्तु को आत्मसात करने की कोशिश की है। यद्यपि मैं भौतिकी एवं गणित की स्कूल एवं कॉलेज के दिनों से ही उपेक्षा किया करता था, परन्तु आज मैं आश्वस्त हूँ कि मेरा सामान्यतया विज्ञान से अन्तर्विरोध मेरे मस्तिष्क को विकसित कर सकने में बाधित नहीं हुआ। लेकिन मेरी आज की उपलब्धियों के पीछे शिक्षण की विधि एवं गुणवत्ता का ही प्रभाव था। जिसके तहत मैंने इसे प्रारम्भ करने के अनुशासन में शामिल होने के सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारणों की व्याख्या की है। लेकिन आज मैं सोचता हूँ कि यह एक गहरी कलात्मक अभिरूचि ही थी जिसने मुझे इस अन्तर अनुशासनात्मक कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। सम्भवतः जिससे मैं विषय एवं स्थिति के बीच रचनात्मक तनाव के अन्वेषण का आनन्द ले सकूंगा। मैंने महसूस किया कि यही ऐसा बिन्दु है जिसमें कुछ और परिश्रम की आवश्यकता है।

आईये, हम आइंस्टाईन के सापेक्षता सिद्धान्त को संक्षेप में समझें और मूल कारण जानें कि क्यों उनकी भौतिकी को अब *उच्च विचार* के विस्तार के रूप में जाना जाता है? जैसा कि चिर-प्रतिष्ठित उच्च भौतिकी तथा आइंस्टाईन के सिद्धान्तों में भी वर्णित है कि वस्तु और दर्शक के बीच अक्षुण्ण विभेद रहता है, जबकि आज की नयी *तत्व भौतिकी* जिसका आधार आइंस्टाईन ने ही तैयार किया, इस तीक्ष्ण विभेद को समाप्त करती

हुई लगती है। मुख्य पात्र को तीन अलग-अलग चरणों में पेश करते हुए नाटक रेखिक परम्परा का अनुकरण करता प्रतीत होता है। परन्तु कभी कभी यह प्रभावकारी रूप से इस रेखिकता के तीनों बिम्बों के बीच आपसी तनाव एवं अन्तर्क्रिया से खत्म भी करता है। वस्तुतः नाटक में आइंस्टाईन त्रिकोणीय विन्यासित छवि है जो अनन्त रूप से चरित्र को परिवर्तित और पुनः परावर्तित करता है। जो दर्शकों के मस्तिष्क में भी एक-दूसरे के कई प्रतिबिम्ब बना देता है। मेरी रूचि का कारण भी यही जटिलता है। यह आइंस्टाईन के पूर्व भौतिकीय विचारों के सम्बन्ध को प्रसंगवश इंगित भी करता है और आज की नई तत्वभौतिकी के रूप को भी दर्शाता है।

मोहन महर्षि

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद : हिमांशु बी. जोशी,
मुकेश तिवारी